'बिछुरत एक प्राण हर ले ही'

'व्यासजी की तरह ही उनको नेता मानने वाले समर्थक भी राजनीति में तर्कों से ज्यादा मानवीय दृष्टिकोण, आपसी संबंध व लिहाज को मानने वाले थे। हजारी बाबू पर भी व्यासजी के व्यक्तित्व और इस सोच की अमिट छाप थी और उन्होंने मानवीय तथा संवेदनशीलता का यह 'बोझ' जिंदगी भर ढोया।'

श्रद्धेय श्री हजारी बाबू
(1921-1985)

सत्ता की राजनीति के निष्ठुर गुणा-भाग या राजनीति शास्त्र/ आइडिऑलजी के निर्जीव सिद्धांतों से निर्लिप्त तथा दिल की आवाज व हृदय की संवेदनाओं पर चलने वाले जयनारायण व्यास के साथी -समर्थक व अनुयायी भी भावना प्रधान थे, तर्क या अर्थ -प्रधान नहीं, और जो उनसे एक बार जुड़ गया वह जीवनपर्यन्त उनसे छिटक नहीं सका। उन लोगों के लिए इस बात का ज्यादा महत्व नहीं था कि व्यास जी मुख्यमंत्री हैं या नहीं, कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष या कांग्रेस की शीर्षस्थ बॉडी सी.डब्ल्यू. सी. के सदस्य हैं या नहीं। उनके ऐसे समर्थकों में से एक थे- 'राष्ट्रदूत' समाचार पत्र के संचालक बाबू हजारीलाल शर्मा । उनका संपर्क उस समय से था जब व्यासजी ऑल इंडिया पीपुल्स कॉन्फ्रैंस व प्रजामंडल के नेता के रुप में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राय: जाया करते थे। उन्होंने तब से मास्टरजी (व्यासजी) को अपना नेता मान लिया था और उनके जीवनकाल तक ही नहीं, मरणोपरांत भी उनकी सोच और चिंतन की क्रियान्विति में लगे रहे।

व्यासजी की तरह ही उनको नेता मानने वाले समर्थक भी राजनीति में तर्कों से ज्यादा मानवीय दृष्टिकोण, आपसी संबंध व लिहाज को मानने वाले थे। हजारी बाबू पर भी व्यासजी के व्यक्तित्व और इस सोच की अमिट छाप थी और उन्होंने मानवीय तथा संवेदनशीलता का यह 'बोझ' जिंदगी भर ढोया।

वे पहले, 1954 के व्यासजी व माणिक्यलाल वर्मा के बीच हुए राजनीतिक समर की रणभूमि के बीच खड़े राजनीतिक प्रहारों को झेलते रहे- जवाब देते रहे, तो बाद में मोहनलाल सुखाड़िया के साथ इसे जारी रखा। उन्होंने उस समय भी रणभूमि में यह समर जारी रखा जबकि सामान्य आकलन से उनका सेनापति (व्यासजी) और खेमा दोनों परास्त हो चुके थे और उसके बाद भी, जबकि स्वयं सेनापति स्मृति शेष हो चुके थे। उन्होंने सही मायनों में मानसिक रुप से इस समर की समाप्ति उस दिन मानी जब सुखाड़िया मुख्यमंत्री पद से हटे और व्यासजी के घर, जोधपुर के ही बरकतुल्ला खान की उस सिंहासन पर ताजपोशी हुई। शायद तब तक उस समर का महत्व समझने वाले भी बहुत कम रह गए थे, पर हजारी बाबू ने उस समर को उसी मर्यादा से जारी रखा जो उनके नेता ने स्थापित की थी; उनकी प्रतिष्ठा और सोच के अनुरुप ।

सुखाड़ियाजी के विरुद्ध संघर्ष में हजारी बाबू ने कभी कमर से नीचे वार नहीं किया अर्थात् उन्होंने कभी विरोध को व्यक्तिगत आचरण या हल्की बातों पर नहीं जाने दिया। विरोध का आधार सदा सरकारी नीतियां व सरकार का भ्रष्टाचार रहा। मुख्यमंत्री की व्यक्तिगत जिंदगी कभी विरोध या आलोचना का विषय नहीं बनी। विरोध सदा खुल्लम-खुला रहा, छद्म या छिपकर नहीं। उदाहरण के लिए 'राष्ट्रदूत' के संपादकीय विभाग में उस शाम को भारी हलचल थी। हजारी बाबू ने आते ही यह देख पूछा, "भाई लोगों ! आज क्या खास बात है?" वरिष्ठ रिपोर्टर मोहनलाल गुप्ता ने उन्हें बताया कि आज सुखाड़ियाजी को कठघरे में खड़ा करने का प्रमाण पकड़ में आ गया। उनका अवयस्क लड़का कार चला रहा था, उससे एक्सीडेंट हो गया और एक बच्ची मर गई। लड़के के पास ड्राइविंग लाइसेंस भी नहीं था। हजारी बाबू ने स्टोरी के इस राजनीतिक महत्व को खारिज करते हुए कहा, "यह क्या बात हुई? सुखाड़िया को कठघरे में खड़ा करना है तो कोई राजनीतिक दुराचरण की बात या आरोप सप्रमाण लाओ। बच्चे के कंधे से बंदूक चलाना कौनसी बहादुरी हुई?" हजारी बाबू के लिए मर्यादापूर्ण, लिहाजगर्भित व मानवीय संबंधों को महत्व देने वाली राजनीति जितनी प्रिय थी उतने ही पत्रकारिता में उच्च आदर्श महत्वपूर्ण थे।

सुखाड़ियाजी के विरोध का उन्हें भारी खामयाजा भी उठाना पड़ा। 'राष्ट्रदूत' को सरकारी विज्ञापन मिलना बंद हो गये और कई प्रशासनिक हथकंडे भी अपनाये गये लेकिन इसका उन पर कोई असर नहीं पड़ा और वे कभी नहीं झुके।

वे राजस्थान की उत्कृष्ट पत्रकारिता के प्रथम शलाका पुरुष थे जिन्होंने 'राष्ट्रदूत' के प्रकाशन में ऐसे अनेक पत्रकार उद्यमियों को तैयार किया जो आज शीर्ष पर हैं। राजस्थान में लोकधर्मी पत्रकारिता के प्रादुर्भाव की आधारशीला रखकर लोकचेतना को जागृत करने वाली विशुद्ध पत्रकारिता 'राष्ट्रदूत' से ही विकसित हुई। उन्होंने शुरु से ही भारतीय संविधान में प्रदत्त अभिव्यक्ति की गारंटी और दुहरी -तिहरी गुलामी के परिवेश के दमन और भय से ऊपर उठने के लिए अपने पत्रकारों को खुली छूट दी। इसी का परिणाम था कि इसमें लब्ध प्रतिष्ठित संपादक सुमनेश जोशी, युगलकिशोर चतुर्वेदी, चंद्रगुप्त वार्ष्णेय, दिनेश खरे जैसे लोगों ने इसकी भवभूति को बढ़ाया। पत्रकारिता को पेशे के रुप में अपनाने के उपरान्त भी अर्थ लालसा से विरक्त, परिवर्तित परिवेश, जन -जन में राजनीतिक प्रभाव की प्रबल आकांक्षा तथा सत्ता को प्रभावित करने की अपनी सामर्थ्य के निर्माण में 'राष्ट्रदूत' घनीभूत रुप से सक्रिय रहा।

हजारी बाबू ने किसी पाठशाला में पत्रकारिता या संपादन का ज्ञान अर्जित नहीं किया बल्कि यह गुण उनमें पैदाइशी था। उनकी दृष्टि पैनी एवं साफ थी। पत्रकारिता और राजनीति पर उनकी जबर्दस्त पकड़ थी। संवाददाताओं को वे समाचार संकलन और उनकी प्रस्तुतिकरण के गुर बताते तथा उनके समाचार का स्वयं परिमार्जन कर उसे रोचक बना देते। समाचार प्रस्तुतिकरण के उन्हें टिप्स समझाते। अखबार में दिलचस्पी इतनी रखते थे कि रोज रात सोने से पूर्व टेलीफोन कर 'डैस्क' पर जो भी होता उससे पूछते, "आज फर्स्ट लीड क्या है?"

हजारी बाबू को लोगों को अपना बनाना आता था। उनकी यह कला जबर्दस्त थी। उनके निकट जाने का एक ही सहज सरल तरीका था- आदि से अंत तक कर्मशील बने रहना। उनका सबसे बड़ा गुण यह था कि वे मालिक होते हुए भी सदा पत्रकार ही बने रहे, कभी मालिक की भूमिका में नहीं उतरे। यह अहंकार उन्हें छू तक नहीं पाया।

हजारी बाबू समाचारों के मामले में निर्भीकता के हिमायती थे और इसके लिए अपने पत्रकारों को भी प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने कभी किसी समाचार को दबाने अथवा चबाने की वकालत नहीं की। वे किसी समाचार पर अपनी टिप्पणी अवश्य कर देते थे पर उसे संशोधित करने के लिए रिपोर्टर को विवश नहीं करते थे।

समाचार संपादक शिवपूजन त्रिपाठी और भैरोसिंह शेखावत में काफी छनती थी, यह बात हर कोई जानता था । इस मैत्री भाव के कारण वे प्राय: भैरोसिंह जी के समाचार को अखबार की फर्स्ट लीड (प्रमुख खबर) बना देते थे। शिवपूजनजी की इस कर्मकला का हजारी बाबू उपहास अवश्य किया करते थे पर कभी टोका -टाकी नहीं की। ऐसी छूट शायद ही कोई अखबार का मालिक किसी पत्रकार को दे, जैसे पूरा समाचार पत्र भैरोंसिंह जी के लिए ही हो।

हजारी बाबू पत्रकारों के सच्चरित्र और सदाचरण के सख्त हिमायती थे। आदित्येन्द्र चतुर्वेदी फोन पर किसी की सिफारिश कर रहे थे और हजारी बाबू उनके पीछे खड़े सारी वार्तालाप सुन रहे थे। चतुर्वेदी फोन करने के बाद जैसे ही पीछे घूमे, हजारी बाबू सामने तटस्थ खड़े नजर आए। चतुर्वेदीजी निर्वाग खड़े रह गए। हजारी बाबू पूछ बैठे, "सिफारिश करते -फिरते हो या अखबारनवीसी?" चतुर्वेदी को काटो तो खून नहीं। पर इस घटना का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा और इसके बाद उन्होंने कभी स्वयं को एक आम आदमी से अलग नहीं समझा।

हजारी बाबू मस्तमौला और अलमस्त किस्म के महाप्राण चिंतक और विचारक थे। उनके संगी -साथी भी वैसे ही खुशनुमा मिजाज के थे। उनकी हर सुबह जौहरी बाजार में गोपालजी के रास्ते की नुक्कड़ पर शर्मा रेस्तरां में यारों के साथ चाय-गोष्ठी चलती थी। उसके वे नायक होते थे। वहां 'राष्ट्रदूत' में छपे समाचारों पर वे प्रतिक्रिया जानने का प्रयास करते रहते। कभी कभी वे अपनी टिप्पणी भी करते किन्तु संक्षिप्त -प्राय: एक ही वाक्य में। यदि कोई किसी समाचार में थोड़ा बहुत नुक्स निकाल देता तो वह उनसे बर्दाश्त नहीं हो पाता। यदा -कदा पारा चढ़ जाता और कुछ भी बोल देते। लेकिन अगले ही पल सामान्य हो जाते। उनकी जानकारी बहुविध होती और उसमें पत्रकारिता की खोजी दृष्टि रहती।

रात का खाना वे प्रेस में ही रात बारह -एक बजे खाते, तब तक अखबार के पृष्ठ बनकर आना शुरु हो जाते। वे खाना खाते जाते और उन्हें देखते जाते। इस दौरान भी उनकी प्रेस में हर कहीं नजर रहती।

वे अत्यंत मृदुभाषी और अच्छे सार्वजनिक कार्यकर्ता थे। उनकी मिलनसारिता लोगों के दिल पर आज भी अमिट है। हृदय विशाल था। प्राकृतिक आपदाओं, जैसे बाढ़ आदि के समय लोगों को दु:खी देखकर उनका हृदय द्रवित हो जाता था। ऐसे समय में वे लोगों की खुलकर आर्थिक सहायता करते थे। वे एक समृद्ध परिवार से थे। सरल, निश्छल और सहृदय व्यक्तित्व आकर्षण का केन्द्र बिन्दु था। धनी होने पर भी कभी उनका अहंकार छलका नहीं। सार्वजनिक कार्यकर्ताओं की समय- समय पर आर्थिक सहायता करते थे। उनके द्वार पर आया कोई जरुरतमंद निराश नहीं लौटा। वे आध्यात्मिक पुरुष थे और आध्यात्मिक साहित्य के अध्ययन को कल्याणकारी मानते थे। प्रतिभाओं को ढूंढकर आगे बढ़ाने में वे सदा अग्रगण्य रहे। वे साहित्य प्रेमी थे। साहित्यकार उनके इर्द-गिर्द घूमते रहते थे और उनका निवास कवि सम्मेलनों एवं गोष्ठियों का मंच बना रहता था। रामवृक्ष बेनीपुरी, रामधारीसिंह दिनकर, सुनीतिकुमार चटर्जी, ताराशंकर बंदोपाध्याय जैसी साहित्यिक विभूतियां उनमें भाग लेती रहती थीं। राजस्थान के भी कई साहित्यकारों एवं उभरते साहित्यकारों, ताराप्रकाश जोशी, तारादत्त निर्विरोध जैसे लोगों को उनसे काफी प्रोत्साहन मिला।

उन्होंने अनेक साहित्यकारों को न केवल प्रश्रय दिया बल्कि उनके विकासमान स्वरुप को निखारा भी। उन्हें आगे बढ़ाने में अपनी पूरी सहायता दी। पंडित हजारी बाबू वैसे तो पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष थे लेकिन वह मन, वचन और कर्म से अपने ब्राह्मणत्व को कभी नहीं छिपाते थे तथा एक ब्राह्मण और गुरु की तरह समाज के लिए एक शिक्षक की भूमिका भी निभाते थे।

हजारी बाबू जमीन से जुड़े और मानवता के रस में डूबे वो व्यक्ति थे जिसने जिंदगी छककर जी। संबंधों की अंतरंगता, दोस्तों की दोस्ती, जीवन में बेफ्रिकी, सोच में मस्ती। अगर यह सब नहीं होता तो शायद जयनारायण व्यास से वह अटूट संबंध नहीं होते, जो हजारी बाबू ने उनकी मृत्यु के बाद भी सहजता से निभाए।

उनकी जीवन शैली सादगीभरी थी। वे अपनी आधा दर्जन गाड़ियां होते हुए भी अधिकतर रिक्शा से ही आते -जाते थे। खादी के साधारण कपड़े और पैरों में चप्पलें उनका कुल लिबास था। वे अनुशासनप्रिय थे और समयबद्धता का पूरा ध्यान रखते थे। किसी कर्मचारी से कोई व्यक्ति बार -बार मिलने प्रेस में आता तो उसे टोक देते, "यहां 5-6 घंटे काम करने आता है, इसमें भी आप पीछा नहीं छोड़ते।"

हजारी बाबू ने लेखन और तकनीक के धनी होने की धुन नहीं पाली और न ही उन्होंने अन्यों के भरोसे पर काम अंजाम देने की कल्पना बनाई। वे जिस काम को ठीक समझकर करना शुरु करते उसमें अपने तन, मन और धन से समर्पित होकर लग जाते थे। लोकनायक जयनारायण व्यास के नेतृत्व में, रामकरण जोशी के सहयोगी होने से परिवार के बड़े काम से हटकर उन्होंने राजस्थान के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया। पहली विधानसभा में सदस्य बने तो सदन में उनकी उपस्थिति रिकॉर्ड बनी। अपने राजनीतिक जीवन में उन्होंने कभी भी अपनी निष्ठा में कोई बदलाव नहीं किया। सोच विचार के बाद जिसके साथ लग गए उसी के होकर रहे। प्रलोभन, दबाव और हानि भय में भी कभी विचलन या शिकन नहीं आने देना उनके चरित्र की विशेषता थी। अपनी निष्ठा पर अडिग रहते हुए भी समान दृष्टि व उद्देश्यों के लिए तथा सामान्य व्यवहार में वे हमेशा विरोधियों के साथ निश्छल घनिष्ठता बनाए रखते थे । यही कारण था कि राजनीतिक धुर मतभेदों के बावजूद भैरोंसिंह शेखावत एवं कामरेड एच.के. व्यास जैसे लोगों से भी उनकी खूब पटती थी।

उनके गांव कांसली के लोगों का उन्होंने पूरा ध्यान रखा। हर विपदा के समय उनके साथ खड़े रहे। कांसली के लोग उन्हें भगवान की तरह मानते थे। 1940 में जब भीषण अकाल पड़ा तो उन्होंने पशुओं के लिए तीन हजार मण चारा नि:शुल्क भिजवाया। वहां का कोई भी रोगी जयपुर में चिकित्सा कराने आता तो हजारी बाबू उसकी सेवा-सुश्रुषा में व्यक्तिगत रुचि लेते थे और चिकित्सक से उसके बारे में जानकारी लेते रहते थे। उसके खान-पान एवं दवाओं तक की व्यवस्था सुनिश्चित कराते थे। वहां से जयपुर पढ़ने आने वाले छात्रों के ठहरने, खाने और पढ़ाई पर भी वे मुक्त हस्त से व्यय करते थे। उन्होंने अनेक छात्रों की जिंदगी बनायी। हजारी बाबू के समय तक कांसली में शिक्षा सबको मुफ्त ही दी जाती थी। इतना ही नहीं किसी मेधावी छात्र ने उच्चतर शिक्षा की उनसे ख्वाहिश की तो वे उसकी व्यवस्था कर देते थे। ऐसे ही एक रघुवीर प्रसाद गुप्ता उच्चतर शिक्षा प्राप्त कर अमेरिका में बस गए हैं। ऐसे अनेक लोग हैं जो आज उच्च पदों पर आसीन हैं।

हजारी बाबू का जन्म पौष शुक्ला प्रतिपदा संवत् 1977 को कांसली में हुआ और उन्होंने कलकत्ता से बी.ए. (फार्मेसी) की उपाधि प्राप्त की। सन् 1937 में बड़ा बाजार छात्रसंघ के मंत्री, 1938 में जिला विद्यार्थी संघ के अध्यक्ष तथा 1939-40 में कलकत्ता जिला विद्यार्थी संघ के अध्यक्ष चुने गये। 1937 -38 में वार्ड कांग्रेस के मंत्री तथा इसी दौरान बड़ा बाजार नवयुवक सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष बनाये गये। 1941 में बनारस जिला विद्यार्थी संघ के मंत्री 1944-45 में बिहार चेम्बर ऑफ कामर्स की कार्य समिति के सदस्य तथा 1946 से 49 तक अ.भा. फार्मेसी एसोसियेशन के मंत्री रहे ।

वे सहज, उदार और निर्भीक पत्रकारिता पुरुष थे जिनके आसपास शब्द, संस्कृति, समाज और राजनीति का ताना -बाना बुना जाता था। हजारी बाबू धर्मपरायण व्यक्ति थे। पहाड़ी बाबा में उनकी अगाध श्रद्धा थी, यहां तक कि उनका अंतिम संस्कार भी उन्होंने ही कराया था। हजारी बाबू तीन फरवरी 1985 को यद्यपि इस दुनिया से कूच कर गये पर वे उन लोगों में से हैं जिनके लिए कहा गया है,

"बिछुरत एक प्राण हर ले ही।"

उनकी अलमस्त आकृति उनके मिलने वालों में आज भी जीवंत है। महान कवि 'प्रसाद' के शब्दों में वे दुहरा रहे हैं-

चमकूंगा धूलकणों में, सौरभ में उड़ जाऊंगा।
पाऊंगा कहीं तुम्हें जो, ग्रह -पथ में टकराऊंगा।।

आज यह प्रश्न समकालीन चिंतकों, पत्रकारों एवं राजनेताओं के दिमाग में कौंधता है कि यदि हजारी बाबू ने सुखाड़ियाजी के आगे घुटने टेककर उस समय सिद्धांतों से समझौता कर लिया होता तो राजस्थान में पत्रकारिता किस मुकाम पर होती?

■ हरिनारायण शर्मा

स्व. पण्डित हजारी लाल शर्मा के जीवन पर आधारित यह लेख राजस्थान स्वर्ण जयन्ती समारोह समिति द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'राजस्थान के प्रकाश स्तम्भ' से उद्धृत है।

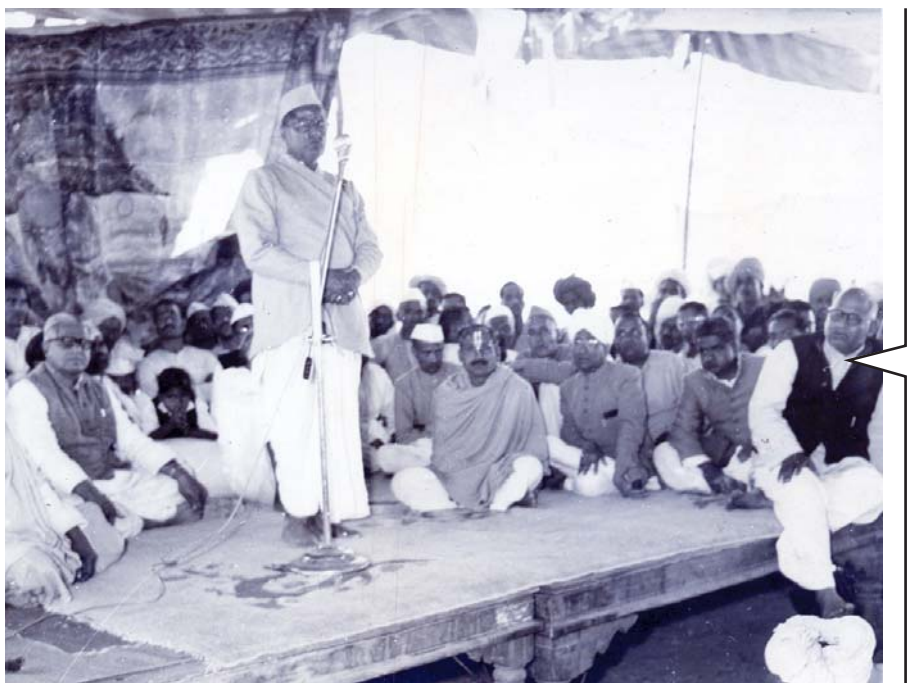

श्री जयनारायण व्यास का हजारी बाबू के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव रहा। व्यास जी के सम्पर्क में वे अपने छात्र जीवन में आये थे, जबकि वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में छात्र नेता के रुप में सक्रिय थे और व्यास जी स्टेट पीपुल्स कॉन्फ्रैंस के अग्रणी नेता थे। व्यास जी की प्रेरणा से ही कलकत्ता छोड़कर हजारी बाबू जयपुर आये तथा 1951 में राष्ट्रदूत अखबार शुरु किया । जैसे प्रगाढ़ सम्बंध व्यास जी व हजारी बाबू के बीच विकसित हुए और जीवन पर्यन्त ही नहीं, व्यास जी की मृत्यु के बाद भी निभाये गये, वह शायद आज चर्चाओं का विषय ही है। व्यास जी ने स्नेह व आत्मीयता दी थी हजारी बाबू को । उस संबंध को ताजा करता है यह चित्र जो 1957 में हजारी बाबू के गांव कांसली में परिवार द्वारा निर्मित भव्य हनुमान मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के समय लिया गया था। उस समारोह में व्यास जी व रामकरण जोशी परिवार के सदस्य के रुप में शामिल हुये। चित्र में हजारी बाबू के पिता श्री रामदयाल जोशी सभा को संबोधित कर रहे है तथा बांयी ओर मसनद का सहारा लिये व्यास जी बैठे हैं। दांयी ओर पैर लटकाये रामकरण जोशी हैं और उनके बगल में हजारी बाबू हैं।

युवा साथियों, तत्कालीन विधायक "भैरोंसिंह शेखावत" के साथ आल्हादित क्षण।